अध्याय
12

कैदी और कोकिला

© JCERT not to be republished

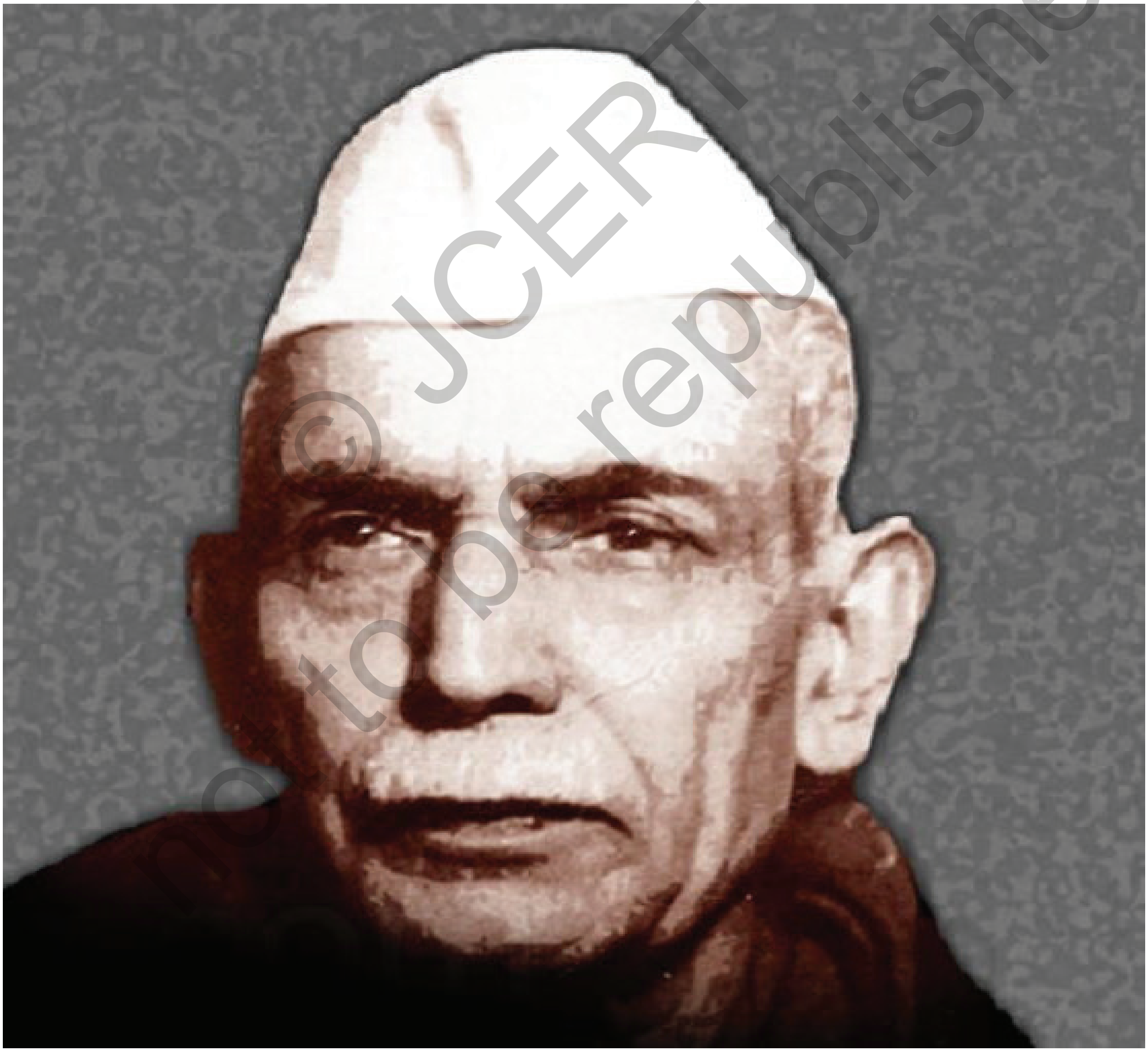

माखनलाल चतुर्वेदी

जीवन परिचय

जीवन परिचय माखनलाल चतुर्वेदी

- जन्म- 4 अप्रैल 1989
- स्थान- मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले का बाबई गांव
- निधन- 30 जनवरी 1968 भोपाल
- मुख्य रचनाएं- हिमकिरीटनी, साहित्य देवता, हिम तरंगिणी, वेणु लो गूंजे धरा, समय के पांव।
- संपादन- प्रभा, कर्मवीर, प्रताप
- पुरस्कार- साहित्य अकादमी, पद्मभूषण

साहित्यिक विशेषताएँ

- चतुर्वेदी जी की रचनाएं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हैं।
- उनमें स्वतंत्रता की चेतना के साथ देश के लिए त्याग और बलिदान की भावना भी मिलती है। इसलिए उन्हें 'एक भारतीय आत्मा' कहा जाता है।
- वे स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कई बार जेल गए। उन्होंने राष्ट्रीय जागरण के अलावा भक्ति, प्रेम, और प्रकृति संबंधी कविताएं भी लिखी।
- उन्होंने शिल्प की तुलना में भाव को अधिक महत्व दिया है। बोलचाल की भाषा के साथ-साथ उर्दू-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।
- इस कविता को उन्होंने सन 1930 में जबलपुर में सेंट्रल जेल में लिखी थी।
- उन्होंने मुक्त छंद में रचनाएं की है जिनमें भाव पक्ष सबल है। कविता में तत्सम और उर्दू-फारसी मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

© JCERT not to be republished

पाठ परिचय :

प्रस्तुत कविता में माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अंग्रेजी शासनकाल के दौरान जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार और घोर अत्याचार का वर्णन किया है। कवि जेल में अकेला और उदास है। कोयल से अपने मन का दुख, असंतोष और ब्रिटिश शासन के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त करते हुए करता है कि यह समय मधुर गीत गाने का नहीं बल्कि मुक्ति का गीत सुनाने का है। कवि को लगता है कि कोयल भी पूरे देश को एक कारागार के रूप में देखने लगी है इसलिए अर्ध रात्रि में चीख उठी है।

काव्यांश- 1

क्या गाती हो ?
क्यों रह-रह जाती हो ?
कोकिल बोलो तो!
क्या लाती हो ?
संदेशा किसका है ?
कोकिला बोलो तो !

काव्यांश- 1

शब्दार्थ- कोकिला- कोयल, संदेशा- सूचना।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता हमारे पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' से लिया गया है; जिनके कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी हैं। कविता के इस अंश में कवि ने कारागार में बंद एक स्वतंत्रता सेनानी की मनोदशा को बताया है।

व्याख्या- रात के घोर अंधेरे में जब कवि कोयल का गाना सुनते हैं तो उसके मन में कई तरह के प्रश्न और भाव उठते हैं।

वह कहते हैं- तुम आधी रात में क्या गा रही हो, यह आजादी का तराना है या पराधीनता का दुख व्यक्त कर रही हो और गाते-गाते अचानक बीच में चुप क्यों हो जाती हो। कोयल आखिर कुछ तो बोलो, तुम संदेशा किसका लाई हो?

विशेष- रह-रह में अनुप्रास अलंकार है। भाषा सरल, सहज एवं बोलचाल की है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश-2

ऊँची काली दीवारों के घेरे में
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में
जीने को देते नहीं पेट भर खाना
जीवन पर अब दिन रात कड़ा पहरा है
शासन है , या तम का प्रभाव गहरा है ?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली
इस समय कालिमामयी क्यूँ आली ?

काव्यांश-2

शब्दार्थ- बटमार- रास्ते में यात्रियों को लूट लेने वाला, तम- अंधेरा, आली- सखी।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला" से ली गई है जो हमारे पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित है। इन पंक्तियों में कवि ने पराधीन भारतीयों के प्रति ब्रिटिश अत्याचार को उजागर करने का प्रयास किया है।

भावार्थ- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि को स्वतंत्रता सेनानी और कैदी के रूप में जेल के भीतर अंधकार में; ऊंची दीवार के घेरे में रख दिया गया है। जहां चोरों, डकैतों और लुटेरों के साथ अपमानित होकर रहना पड़ता है। यहां पेट भर खाना भी नहीं दिया जाता है। उन्हें ना जीने दिया जाता है ना ही मरने दिया जाता है। जीवन की हर गतिविधि पर अंग्रेजों का कड़ा पहरा लगा रहता है। यहां पैरा चेज कवि ने अंग्रेजों के शासन की तुलना अंधकार से की है जिसमें सिर्फ शोषण और अत्याचार है। जब कवि आसमान की ओर देखते हैं तो आशा रूपी चंद्रमा दिखाई नहीं देता बल्कि निराशा रूपी अंधकार दिखाई पड़ता है। कवि को आश्चर्य होता है कि इस अंधकार में कोयल क्यो जगी हुई है। मुझे भी तो बताओ।

विशेष- कवि ने अंग्रेजों के शासन की तुलना अंधकार से की है जिसमें सिर्फ शोषण और अत्याचार है भाषा सरल एवं सहज एवं शैली बिम्बात्मक है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश-3

क्यों हूक पड़ी ?
वेदना बोझ वाली-सी;
कोकिला बोलो तो !
क्या लूटा ?
मृदुल वैभव की
रखवाली-सी
कोकिल बोलो तो !
क्या हुई बावली ?
अर्द्धरात्रि को चीखी,
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ हैं दीखी ?
कोकिल बोलो तो ?

काव्यांश-3

शब्दार्थ- मृदुल- कोमल,दयालू। वैभव -सम्पति। दावानल- जंगल की आग

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी की कविता कैदी और कोकिला" से ली गई है जो हमारे पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित है। कविता की इन पंक्तियों में कवि को लगता है कि जेल में कैद भारतीयों की वेदना ओं का एहसास कोयल को भी था।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि को लगता है कि कोयल ने अंग्रेजो के द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचार को देख लिया है इसलिए उसके कंठ से मीठी ध्वनि के बदले वेदना का स्वर फूट रहा है। कवि को लगता है कि कोयल अपनी वेदना साझा करना चाह रही है इसलिए वह कोयल से पूछते हैं कि हे कोयल! आखिर तुम पर कैसे दुखों का पहाड़ टूटा है, तुम्हारा क्या लुट गया है? मुझे भी बताओ। क्या कोई पीड़ा तुम्हें सता रही है? आगे ब्रिटिश शासन की क्रूरता की ओर इशारा करते हुए कोयल से कहते हैं कि क्या तुम्हें संकट रूपी जंगल में लगी आग की भयंकर ज्वालाएँ दिख रही हैं? हे कोयल! मुझे भी बताओ तुम्हें क्या हुआ है?

विशेष- तत्सम प्रधान शब्दावली है। कोयल के प्रति आत्मीय भाव प्रकट हुआ है। प्रश्न शैली को अपनाया गया है कवि ने अंग्रेजों की दमनकारी नीति एवं जेल में बंद कैदियों को दी जाने वाली यातनाओं का वर्णन किया है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश -4.

क्या ? देख न सकती जंजीरों का गहना ?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश-राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ ? जीवन की तान,
गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान!
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,
इसलिए रात में गजब ढा रही आली ?
इस शान्त समय में,
अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो ?
कोकिल बोलो तो!
चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज
इस भाँति बो रही क्यों ?
कोकिल बालों तो

काव्यांश-4

शब्दार्थ- मोट- पूर,चरसा (चमड़े का डोल जिससे कुएं आदि से पानी निकाला जाता है)

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला" से ली गई है जो हमारे पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित है। कविता की इन पंक्तियों में कवि ने कोयल को उलाहना देते हुए अंग्रेजी शासन द्वारा भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों का वर्णन किया है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कोयल से कहते हैं कि क्या तू हमें जंजीरों में जकड़ा देख नहीं सकती? यही तो हमारी पराधीनता का प्रतिफल है। एक तरह से ब्रिटिश शासन के द्वारा दिया गया एक प्रकार का गहना है अब तो जैसे कोल्हू चलने की आवाज हमारे जीवन का गान बन गया है। कड़ी धूप में पत्थर तोड़ते हुए उंगलियों से देश की स्वतंत्रता का गान लिख रहे हैं। हम अपने पेट पर रस्सी बांधकर चरसा खींच-खींचकर ब्रिटिश सरकार की अकड़ की कुआ खाली कर रहे हैं। अर्थात यहां कवि कहना चाहते हैं कि हम इतने दुख सहने के बावजूद भी ब्रिटिश हुकूमत के सामने घुटने टेकने वाले नहीं है।

आगे कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि आज रात्रि में तुम्हारी इस वेदना भरी आवाज मेरे ऊपर गजब ढा दिया है और मेरे अंतर्मन को व्याकुलता से भर दिया।

विशेष- 'गजब ढाना' मुहावरे का प्रयोग हुआ है 'चाकसू' धनात्मक शब्द है जंजीरों का गहना ब्रिटिश अकड़ का कुआँ में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। भाषा सरल, सहज एवं स्वाभाविक है। कवि ने यहाँ अंग्रेजी शासन के अत्याचारों का वर्णन किया है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश-5

काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर कल्पना काली,
मेरी काल-कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लौह-शृंखला काली,
पहले ही हुंकृति की ब्याली,
तिस पर है गाली, ए आली!
इस काले संकट-सागर पर
मरने की, मदमाती!
कोकिला बोलो तो!
अपने चमकीले गीतों को
क्योंकर हो तैराती!
कोकिल बोलो तो

काव्यांश-5

शब्दार्थ- मोट- पूर,चरसा (चमड़े का डोल जिससे कुएं आदि से पानी निकाला जाता है)

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला" से ली गई है जो हमारे पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित है। कविता की इन पंक्तियों में कवि ने उसी अत्याचार का वर्णन किया है जो भारतीयों पर अंग्रेजी शासन के द्वारा किए जाते थे। पैरा चांग कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि कोकिल बताओ कि तुम अपने गान के माध्यम से मजबूत शासन के प्रति विद्रोह के बीज क्यों बोरही हो? इस समय देश में निराशा रूपी अंधकार की कालिमा हर तरफ छाई हुई है- तुम काली हो और रात भी काली है। इसी तरह अंग्रेजों की करतूतें भी काली है, देश में निराशा की जो लहर फैली हुई है वह भी काली है और मन में बुरी कल्पनाएं उठ रही है वह भी काली है! इतना ही नहीं हमारी टोपी और कंबल का रंग भी काला है! हमने जो हथकड़ियां यानि जो बेड़ियाँ पहनी है वह भी काली रंग की है जेल के पहरेदारों की हुंकार भी जहरीली सांप की तरह काली है। उस पर यह लोग बात बात पर गालियां देते हैं। अर्थात यहां का पूरा परिवेश ही काला है। प्राणों पर भी संकट है ऐसे में जबकि शासन इतना क्रूर और निर्दयी है। पराधीनता के इस संकट रूपी सागर में मुक्ति की आकांक्षा रूपी इन चमकीले गीतों को तुम क्यों तैरा रही हो?

© JCERT not to be republished

काव्यांश-5

विशेष- 'गजब ढाना' मुहावरे का प्रयोग हुआ है

चाकसू-धनात्मक शब्द है

जंजीरों का गहना ब्रिटिश अकड़ का कुआँ में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

भाषा सरल, सहज एवं स्वाभाविक है। कवि ने यहाँ अंग्रेजी शासन के अत्याचारों का वर्णन किया है।

काव्यांश-6

तुझे मिली हरियाली डाली,

मुझे नसीब कोठरी काली!

तेरा नभ-नभ में संचार

मेरा दस फुट का संसार!

तेरे गीत कहावें वाह,

रोना भी मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी-मेरी,

बजा रही तिस पर रणभेरी!

इस हुँकृति पर,

अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ ?

कोकिल बोलो तो!

मोहन के व्रत पर,

प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!

कोकिल बोलो तो!

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ– संचार-भार्मन, विषमता-असमान, रणभेरी-युद्ध के समय बजे जाने वाला वाद्य यंत्र, हुँकृति-गान, कृति-रचना, आसव-रस आलव जड़ी-बूटी से तैयार औषधि।

काव्यांश-6

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला" से ली गई है जो हमारे पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-1 में संकलित है। कविता की इन पंक्तियों में देश की अमानवीय वातावरण को दिखाया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी तुलना कोयल से करते हैं और कहते हैं- हे कोयल! तुम्हें तो हरियाली युक्त डाल अर्थात सुख सुविधाएं मिली हुई है जबकि मेरे भाग्य में जेल की काली कोठरी है। तुम आकाश में विचरण करती हो, पूरा आकाशी तुम्हारा है; जबकि मेरा संसार 10 फुट की जेल की कोठरी में ही सिमट कर रह गया है। तुम अपने मीठे गीतों से सबका मन मोह लेती हो जबकि मैं रो भी नहीं सकता। क्या तुम मेरी व्यथा दिखा कर मुझे पराधीनता के चंगुल से छूटने के लिए रणभेरी सुना रही हो? अर्थात् मुक्ति के संग्राम के लिए प्रेरित कर रही हो? तो तुम ही बताओ मैं तुम्हारी इस अनमोल काम के लिए तुम्हें क्या दूं? तुम्हारा क्या काम कर दूं? तुम ही बताओ कि गांधी के देश की स्वतंत्रता के व्रत की रक्षा के लिए अपने प्राणों के रस का आसन बनाकर किस में भर दूँ।

विशेष– यहां कवि स्वयं का और कोयल का तुलनात्मक रूप प्रस्तुत किया है।

कोयल को हर जगह सराहना मिलती है।

"कहो क्या कर "अनुप्रास अलंकार है।

'मोहन' शब्द महात्मा गांधी के लिए प्रयोग हुआ है।

सरल, सहज एवं स्वभाविक भाषा का प्रयोग हुआ है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न- उत्तर

प्रश्न- कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर : आधी रात को कोयल की कूक सुनकर कवि को यह लगा कि वह उसे कुछ कहना चाहती है। कोयल या तो उसे (कैदी या कवि) लगातार लड़ते रहने की प्रेरणा देना चाहती है या उसकी यातनाओं से मिलने वाले दर्द को बाँटना चाहती है। उसे लगता है कि कोकिल कवि के दुखों को देखकर अपने आँसू बहा रही है और चुपचाप अँधेरे को बेधकर विद्रोह की चेतना जगा रही है।

प्रश्न 2: कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बताई?

उत्तर : कवि ने कोकिल के बोलने पर निम्नलिखित कारणों की संभावना जताई है-

1. कोयल जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानियों को देशवासियों की दुर्दशा के बारे में बताने आयी है।

2. कोयल कैद हुए स्वतंत्रता सेनानियों को धैर्य बँधाने एवं दिलासा देने आई है।

3. कोयल कैद हुए स्वतंत्रता सेनानियों के दुखों पर मरहम लगाने आई है।

4. कोयल क्रांतिकारियों के अंदर देश-प्रेम की भावना जाग्रत करने आई है।

प्रश्न 3 : किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों?

उत्तर : पराधीन भारत में ब्रिटिश शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है। क्योंकि ब्रिटिश शासक बेकसूर भारतीयों पर घोर अत्याचार कर रहे थे। उन्होंने जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानियों को तरह-तरह की यातनाएँ दीं। उन्हें कोल्हू के बैल की तरह जोता गया।

प्रश्न 4 : कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : पराधीन भारत के समय के जेलों में भारतवासियों को पशुओं की भाँति-रखा जाता था। उन्हें इस प्रकार की यातनाएँ दी जाती थीं कि सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

उन्हें ऊँची-ऊँची दीवारों वाली जेलों में कैद कर के रखा जाता था।

उन्हें दस फुट की छोटी-छोटी कोठरियों में कैद कर के रखा जाता था।

उन्हें भरपेट खाने के लिए खाना भी नहीं दिया जाता था।

उनके साथ पशुओं-सा व्यवहार किया जाता था।

उन्हें बात-बात पर गालियाँ दी जाती थीं। कोडे मारकर जख्मी कर छोड़ दिया जाता था।

उन्हें तड़प-तड़प कर मरने के लिए छोड़ दिया जाता था।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 5 : भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!

(ख) हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।

(क) कवि के अनुसार, संसार में दुख-ही-दुख हैं, यदि कहीं पर कुछ मृदुलता और सरसता बची भी है तो वह कोयल के मधुर स्वर में ही बची है। अतः कोयल मृदुलता भरे स्वरों की रखवाली करने वाली है। कवि कोयल से पूछते है कि आखिर वह जेल में अपना मधुर स्वर गुँजाकर उसे क्या कहना चाहती है!

(ख) इसमें ब्रिटिश शासन की असहनीय यातनाएँ झेलता हुआ कवि स्वाभिमानपूर्वक कहता है कि वह अपने पेट पर कोल्हू का जूआ बाँधकर चरसा चला रहा है। इससे यह आशय है कि उनसे पशुओं जैसा सख्त काम कराया जा रहा है, फिर भी वह हार नहीं मान रहे है। जिसके कारण ब्रिटिश सरकार की अकड़ ढीली पड़ती जा रही है। यह सब देखकर अब अंग्रेज़ों को समझ आ गया है कि अब इन सेनानियों पर अत्याचार करने से भी वे सफल नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न 6 : अर्धरात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा है?

उत्तर : आधी रात में कोयल की चीख सुनकर कवि को यह अंदेशा होता है कि उसने भारतीयों के अंदर उपस्थित आक्रोश एवं असंतोष की ज्वाला को देख लिया होगा। यह ज्वाला जंगल में लगने वाली आग के समान भयंकर रही होगी। कोयल उसी ज्वाला (क्रांति) की सूचना देने के लिए जेल परिसर के पास आई है।

प्रश्न 7 : कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

उत्तर : कवि को कोयल से इसलिए ईर्ष्या हो रही है क्योंकि कोयल स्वतंत्र होकर आकाश में उड़ रही है, जबकि कवि जेल में बंदी है। कोयल पेड़ों की टहनियों में बैठकर हरियाली का आनंद ले रही है, जबकि कवि दस फुट की काल कोठरी में जीने के लिए विवश है। कोयल के सुरीले गीत की सभी सराहना करते हैं, जबकि कवि के लिए रोना भी गुनाह हो गया है।

प्रश्न 8 : कवि के स्मृति-पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें वह अब नष्ट करने पर तुली है?

उत्तर : कवि के स्मृति पटल पर कोयल का यूँ असमय अत्यंत मधुर स्वर में गीत गाना विचित्र सा लग रहा है। जिन्हें अब वह नष्ट करने पर तुली है।

प्रश्न 9 : हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?

उत्तर : पं. माखनलाल चतुर्वेदी क्रांतिकारी कवि थे, उन्होनें स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए स्वयं से प्रेरणा प्राप्त करके संघर्ष का मार्ग अपनाया था। वे जेल को अपना प्रिय आवास मानते थे तथा हथकड़ियों को गहना समझते थे। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के महान उद्देश्य के लिए हथकड़ियाँ स्वीकार कीं, अतः उनसे उनका गौरव और भी बढ़ा। इसलिए उन्होंने हथकड़ियों को गहना कहा।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 10 : 'काली तू .... ऐ आली!'–इन पंक्तियों में 'काली' शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।

उत्तर : 'काली तू ... ऐ आली!' इन पंक्तियों में काली शब्द की आवृत्ति बार-बार हुई है। इस शब्द का अर्थ भी उसके संदर्भानुसार है। संदर्भ के अनुसार काली शब्द के निम्नलिखित अर्थ हैं–

हथकड़ियाँ, रात, कोयल आदि का रंग काला बताने के लिए।

अंग्रेजों के अन्यायपूर्ण कारनामों को बताने के लिए।

पराधीन भारतीयों के भविष्य को अंधकारमय बताने के लिए।

अंग्रेज़ों के प्रति भारतीयों के मन में उठने वाले आक्रोश के संबंध में।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-उत्तर

1. कोयल इस कविता में क्या कार्य कर रही है?

(a) स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए प्रेरणा प्रदान करने का

(b) अपने पंचम स्वर से लोगों को प्रसन्नता प्रदान करने का

(c) लोगों को पीड़ा पहुँचाने का

(d) लोगों को नींद से जगाने का

उत्तर: (a) स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए प्रेरणा प्रदान करने का

2. कवि ने जंजीरों को क्या कहा है?

(a) परेशानी की वस्तु

(b) गहना

(c) शीतलता प्रदान करने वाली वस्तु

(d) एक हथियार

उत्तर (b) गहना

3. कवि ने कोयल के स्वर में किसके स्वर की कल्पना

(a) दुर्गा के

(b) सरस्वती के

(c) लक्ष्मी के

(d) भारत माता के

उत्तर.(d) भारत माता के

4. कवि ने अंग्रेजी शासन की तुलना किस रंग से की

(a) काले (b) पीले

(c) लाल (d) हरे

उत्तर (a) काले रंग से।

5. मोहन के व्रत पर' यहाँ भोजन का क्या आशय

(a) कृष्ण

(b) मोहित करने वाला

© JCERT not to be republished

(c) मोहनदास करमचंद गाँधी

(d) कवि

उत्तर (c) मोहनदास करमचंद गाँधी

6. 'मृदुल वैभव की रखवाली-सी कोकिल बोलो तो' पंक्ति में निहित अलंकार बताइए।

(a) यमक (b) श्लेष

(c) रूपक (d) उपमा

उत्तर (d) उपमा

7. 'इस काले संकट-सागर पर' इस पंक्ति में निहित अलंकार बताइए

(a) वमक (b) रूपक

(c) कोयल (d) उत्प्रेक्षा

उत्तर (b) रूपक

8. 'आली' का क्या अर्थ है?

(a) भौरा (b) झरोखा

(c) कोयल (d) सखी

उत्तर (d) सखी

9. कैदी और कोकिला में कवि की भाषा कैसी है।

(a) संस्कृतनिष्ठ

(b) बोलचाल की खड़ी बोली

(c) अवधी भाषा का प्रयोग

(d) परम्परागत भाष

उत्तर (b) बोलचाल की खड़ी बोली

10. कैदी और कोकिला कविता में अपनी बात कहने के लिए कवि ने किसको माध्यम बनाया है?

(a) जेल को

(b) ब्रिटिश सरकार को

(c) कोयल को

(d) स्वतंत्रता सेनानियों को

उत्तर (c) कोयल को

11. माखनलाल जी की कविताओं में किस स्वर की प्रमुखता है।

(a) ईशभक्ति

(b) श्रृंगार

(c) देशभक्ति

(d) हास्य

उत्तर (c) देशभक्ति

12. 'माखनलाल चतुर्वेदी' जी को किन-किन पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया?

(a) ज्ञानपीठ एवं पद्मश्री

(b) साहित्य वाचस्पति एवं ज्ञानपीठ

(c) पद्मभूषण एवं ज्ञानपीट

(d) पद्मभूषण एवं साहित्य अकादमी

उत्तर (d) पद्मभूषण एवं साहित्य अकादमी

13. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना 'माखनलाल चतुर्वेदी' जी की नहीं है?

(a) हिम किरीटानी

(b) लहर

© JCERT not to be republished

(c) हिम तरंगिनी

(d) वेणी लो गुंजे धरा उनकी

उत्तर (b) लहर

14. माखनलाल चतुर्वेदी जी ने किस पत्रिका का संपादन किया?

(a) सरस्वती (b) वीणा

(c) प्रभा (d) तारिका

उत्तर (c) प्रभा

15. माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म कब और कहाँ

(a) मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के दाबई गाँव में सन् 1889 में

(b) वाराणसी के लमही गाँव में सन् 1886 में

(c) जबलपुर जिले के सौहाना गाँव में सन् 1889 में

(d) सरगुजा जिले के विरमिटी नामक स्थान पर सन् 1910 में

उत्तर (a) मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के दाबई गाँव में सन् 1889 में

16. कोवल किसके बीज बो रही है?

(a) विद्रोह के

(b) प्यार के

(c) नफरत के

(d) वैभव के

उत्तर (a) विद्रोह के

17. कवि ने गहना किसे कहा है?

(a) अपने पांव में पड़ी जंजीरों को

(b) वस्त्राभूषणों को

(c) ब्रिटिश राज को

(d) काले पानी की जेल को

उत्तर (a) अपने पांव में पड़ी जंजीरों

18. कोल्हू की चर्रक-चूँ की आवाज कवि के लिए क्या है?

(a) परेशान करने वाली यात

(b) आनंद की बात

(c) जीवन की तान

(d) मधुर संगीत

उत्तर (c) जीवन की तान

19. कवि अपने गीत कहाँ लिखता है?

(a) कागज पर

(b) मिट्टी पर

(c) जेल की दीवारों पर

(d) अपने वस्त्रों पर

उत्तर (b) मिट्टी पर

20. कवि मोट खींचकर क्या करता है?

(a) पानी निकालता है

(b) ब्रिटिश सरकार की जकड़ निकालता है

(c) कोल्हू चलाकर तेल निकालता है

(d) 'ख' और 'ग' कथन सत्य हैं

उत्तर (d) 'ख' और 'ग' कथन सत्य हैं

© JCERT not to be republished